

रीझो रघुराई (३९)

आया उत्सव साईं प्यारे का श्री रोचलराज दुलारे का
जांकी भक्ति प्रभू को भाई नित्य रीझि रहे रघुराई॥

कीर्तन नाम हैं जारी रटें राम राम सब नर नारी
प्रभू नाम की बड़ी बड़ाई शेष शारदा ने भी गाई॥

मिले प्रेमी करें रामायण गान मधुर संगीत की छेड़ें तान
सब भक्तों की मति हुलसाई मिल गावे जन्म वाधाई॥

लीला राम जन्म की है प्यारी महा भाग है रघुवर महतारी
राजा वसन और भूषण लुटाते हैं
चिरु जीवे लालन सब गाते हैं॥

बहे राम नाम की गंगा धारा रस प्रेम तरंगों का न्यारा
सुन प्रेमी नयनों से नीर बहाते हैं॥

होवे सप्ताह गुरु वाणी का चारों वेदों के प्रमाणी का
होती आसावारी की ललकारें जै सतिगुर नानक किलकारें॥